सामाजिक आन्दोलन (Social Movement)

सामाजिक आन्दोलन सामाजिक परिवर्तन का एक बहुत प्रमुख कारक रहा है। विशेषकर दकियानूसी समाज में सामाजिक आन्दोलनों के द्वारा काफी परिवर्तन आए हैं। इसलिए इनकी चर्चा यहाँ की जानी चाहिए। लेकिन इस शब्द के अर्थ के सम्बन्ध में थोड़ी कठिनाईयाँ हैं। अतः इस अवधारणा की यहाँ विशेष रूप से चर्चा की जा रही है।

गिडेन्स (1993: 642) ने सामाजिक आन्दोलन को निम्नलिखित ढंग से परिभाषित किया है– "A social movement may be defined as collective attempt to

Scanned with CamScanner

further a common interest, or secure a common goal, through collective action outside the sphere of the established institutions." सामुहिक आन्दोलन व्यक्तियों का ऐसा प्रयास है जिसका एक सामान्य उद्देश्य होता है और उद्देश्य की पूर्ति के लिए संस्थागत सामाजिक नियमों का सहारा न लेकर लोग अपने ढंग से व्यवस्थित होकर किसी परम्परागत व्यवस्था को बदलने का प्रयास करते हैं।

गिडेन्स ने कहा है कि कभी-कभी ऐसा लगता है कि सामाजिक आन्दोलन और औपचारिक संगठन (Formal Organization) एक ही तरह की चीजें हैं, पर दोनों बिल्कुल भिन्न हैं। सामाजिक आन्दोलन के अन्तर्गत नौकरशाही व्यवस्था जैसे नियम नहीं होते, जबकि औपचारिक व्यवस्था के अन्तर्गत नौकरशाही नियम-कानून की अधिकता होती है। इतना ही नहीं दोनों के बीच उद्देश्यों का भी फर्क होता है। विश्वविद्यालय एक औपचारिक व्यवस्था है, पर सामाजिक आन्दोलन नहीं। उसी तरह से कबीर पंथ, आर्य समाज, ब्रह्मो समाज या हाल का पिछड़ा वर्ग आन्दोलन (Backward Class Movement) को सामाजिक आन्दोलन कहा जा सकता है, औपचारिक व्यवस्था नहीं। पर कभी-कभी दोनों के बीच की दूरी इतनी कम रहती है कि सामाजिक आन्दोलन और औपचारिक व्यवस्था के बीच अन्तर दर्शाना कठिन काम हो जाता है।

उसी तरह सामाजिक आन्दोलन एवं स्वार्थ समूह (Interest Groups) के बीच अन्तर स्पष्टत: दिखाई नहीं पड़ता है। अर्थात् दोनों पर्यायवाची जैसा लगता है लेकिन दोनों में फर्क है। सामाजिक आन्दोलन परम्परागत व्यवस्था के विरोध में एक स्थापित जनसमूह है, जबकि स्वार्थ समूह कुछ व्यक्तियों का ऐसा समूह है, जिसका मुख्य उद्देश्य नीति निर्धारकों का विचार अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए प्रभावित करना होता है। स्वार्थ समूह आमतौर पर राजनीतिक या नौकरशाही व्यवस्था के क्षेत्र में काम करता है, जबकि सामाजिक आन्दोलन का दायरा उससे काफी बड़ा होता है।

आबर्ली (David Aberle, 1966) ने सामाजिक आन्दोलन को चार भागों में बाँटा है, वे इस तरह से हैं–

(i) रूपान्तकारी आन्दोलन (Transformative Movement)– कुछ ऐसे भी सामाजिक आन्दोलन होते हैं जिसका मुख्य उद्देश्य बुनियादी सामाजिक परिवर्तन होता है। अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कभी-कभी लोग हिंसा नीति भी अपनाते हैं, जैसे– नक्सलबाड़ी आन्दोलन।

(ii) सुधारात्मक आन्दोलन (Reformative Movement)– समाज में कुछ आन्दोलन ऐसे भी होते हैं, जिनका उद्देश्य सीमित सामाजिक परिवर्तन होता है। जब समाज में कुछ दुर्गुण या बुराइयाँ उत्पन्न होती हैं तो उसे दूर करने के लिए सामाजिक आन्दोलन चलाना पड़ता है, ताकि मूल व्यवस्था को जीवन्त एवं उपयोगी बनाए रखा जाय। भारत में सूफी आन्दोलन, भक्ति आन्दोलन, आर्य समाज आन्दोलन एवं ब्रह्मो समाज आन्दोलन इसी किस्म के आन्दोलन माने जाते हैं।

(iii) मुक्ति आन्दोलन (Redemptive Movement)– कभी-कभी समाज

Scanned with CamScanner

में ऐसी बुराइयाँ फैल जाती हैं जो पूरे समाज के लिए खतरा बन जाती हैं। वैसी स्थिति में कुछ वैसे आन्दोलन चलाए जाते हैं, जिससे समाज को खतरे से बचाया जाय। घूसखोरी एक ऐसी समस्या है, जिससे पूरी राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था को खतरा है। यदि घूसखोरी को रोकने के लिए कोई आन्दोलन चलाया जाय तो वैसे आन्दोलन को मुक्ति आन्दोलन कहेंगे। चूँकि कबीर ने ब्राह्मणों एवं मुल्लों के कुप्रभावों से समाज को बचाने के लिए एक आन्दोलन चलाया था, इसलिए कबीर पंथ को एक मुक्ति आन्दोलन कहा जा सकता है। उसी तरह आधुनिक भारत में बाबा साहेब अम्बेदकर का अछूतोद्धार (Remove Untouchability) का कार्य एक मुक्ति आन्दोलन है। Remove (Untouchability)

(iv) **वैकल्पिक आन्दोलन (Alternative Movement)**– वैकल्पिक आन्दोलन वह आन्दोलन है, जिसके अन्तर्गत व्यक्ति के जीवन में आंशिक परिवर्तन की कोशिश की जाती हैं। आज बहुत सारी ऐसी स्वयंसेवी संस्थाएँ हैं जो धूम्रपान एवं नशाखोरी के विरोध में देश में आन्दोलन चला रही हैं। उनकी कोशिश यह हो रही है कि व्यक्ति के जीवन में ऐसे परिवर्तन लाए जायें, जिससे उन्हें उनकी बुरी आदतों से मुक्ति मिले और ऐसी बुराई समाज में और नहीं फैले। यहाँ गौर करने की बात यह है कि वैकल्पिक आन्दोलन ऐसा आन्दोलन है जिसके द्वारा समाज के कुछ व्यक्तियों के जीवन में आंशिक परिवर्तन लाने की कोशिश करते हैं। अर्थात् अन्य तीन किस्म के सामाजिक आन्दोलनों की तुलना में इसका दायरा थोड़ा छोटा है।

Scanned with CamScanner